ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया

सम्राट कुमार

कांटी, 1 नवम्बर। अठारह वर्ष पूर्व स्थापित कांटी थर्मल पावर स्टेशन की दोनों इकाइयों की उत्पादन क्षमता 220 मेगावाट के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आज तक जितने उपाय और खर्च किये गये, उत्पादन उतना ही दूर होता गया है। 90 दिनों में महज 44 दिन चल फिर 46 दिनों तक बंद रहने वाला कांटी थर्मल पावर 18 लाख की राशि डकार कर भी सफेद हाथी बना है। स्थिति इतनी बदतर हो गयी है। 220 मेगावाट उत्पादन लक्ष्य से परे अभियंता प्रबंधन ठेकदार गठजोड़ से लूट एवं कागजी रख-रखाव के कारण थर्मल खस्ताहाल हो चुका है। विगत दो वर्षों से एक इकाई ही एक बार में चल पा रही है। 220 मेगावाट लक्ष्य के विरुद्ध एक मात्र इकाई चलने से अधिकतम उत्पादन 110 ही हो सकता है। जबकि दोनों इकाईयां चलने पर कुल उत्पादन के लक्ष्य का आधा अर्थात 100 से 110 मेगावाट उत्पादन संभव हो पाता था। ऐसे में एक इकाई द्वारा 110 मेगावाट की अपनी क्षमता अनुरूप लक्ष्य की प्राप्ति की बात बेमानी होगी। अब तो एक इकाई में ट्यूब लिकेज, वॉयलर खराबी, पावर फेल नियती बन गई है। विगत 90 दिनों 46 दिन बंद रहने वाले कांटी थर्मल पावर पर 54 लाख खर्च किया गया। वहीं 46 बार चालू करने पर करीब एक करोड़ 84 लाख का तेल खपत हुआ। अभियंतागण जहां ठेकेदारों के बचाव में उपकरण को जर्जर बताते हैं। वहीं गैर तकनीकी कर्मचारी इसे अभियंता की लापरवाही और ठेका मजदूर इसे अभियंता ठेकेदार गठजोड़ की लूट-खसोट नीति एवं उपकरण की कागजी खरीदगी को इस दुर्दशा के लिए जिम्मेवार मानते हैं। विगत 48 घंटों से वर्तमान में चालित इकाई संख्या एक ट्यूब लिकेज के कारण बंद है।

लाइलाज कांटी थर्मल पॉवर

मक्का-गेहूं बीज परीक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम

ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज

बढ़ता ही गया

सम्राट कुमार

कांटी, 1 नवम्बर। अठारह वर्ष पूर्व स्थापित कांटी थर्मल पावर स्टेशन की दोनों इकाइयों की उत्पादन क्षमता 220 मेगावाट के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आज तक 1. जितने उपाय और खर्च किये गये, उत्पादन उतना ही दूर होता गया है। 90

र दिनों में महज 44 दिन चल

उत्पादन के लक्ष्य का आधा अर्थात 100 से 110 मेगावाट उत्पादन संभव हो पाता था। ऐसे में एक इकाई द्वारा 110 मेगावाट की अपनी क्षमता अनुरूप लक्ष्य की प्राप्ति की बात बेमानी होगी। अब तो एक इकाई में ट्यूब लिकेज, वॉयलर खराबी, पावर फेल नियती बन गई है। विगत 90 दिनों 46 दिन

लाइलाज

बंद रहने वाले कांटी थर्मल

पावर पर 54 लाख खर्च

३ फिर 46 दिनों तक बंद रहने कांटी थर्मल किया गया। वहीं 46 बार

पॉवर

वाला कांटी थर्मल पावर 18 लाख की राशि डकार कर भी सफेद हाथी बना है। स्थिति में इतनी बदतर हो गयी है। 220 मेगावाट क उत्पादन लक्ष्य से परे अभियंता प्रबंधन से ठेकदार गठजोड़ से लूट एवं कागजी रख- सरखाव के कारण थर्मल खस्ताहाल हो चुका है। विगत दो वर्षों से एक इकाई ही एक बार में चल पा रही है। 220 मेगावाट लक्ष्य के विरुद्ध एक मात्र इकाई चलने से अधिकतम उत्पादन 110 ही हो सकता है। जबकि दोनों इकाईयां चलने पर कुल

त्र

चालू करने पर करीब एक करोड़ 84 लाख का तेल

खपत हुआ। अभियंतागण जहां ठेकेदारों के बचाव में उपकरण को जर्जर बताते हैं। वहीं गैर तकनीकी कर्मचारी इसे अभियंता की लापरवाही और ठेका मजदूर इसे अभियंता ठेकेदार गठजोड़ की लूट-खसोट नीति एवं उपकरण की कागजी खरीदगी को इस दुर्दशा के लिए जिम्मेवार मानते हैं। विगत 48 घंटों से वर्तमान में चालित इकाई संख्या एक ट्यूब लिकेज के कारण बंद है।

मक्का-गेहूं बीज परीक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम